मीठी वाणी का महत्व

सामाजिक जीवन में अनेक लोगों से मिलना पड़ता है । ऐसे समय वाणी का संयम और विवेक बहुत आवश्यक है । हमें सत्य तो बोलना चाहिए; पर उसे किस प्रकार से बोलें, यह ध्यान रखना भी आवश्यक है ।

एक राजा ने स्वप्न देखा है कि उसके सारे दाँत झड़कर गिर रहे हैं। उसने इसका अर्थ समझने के लिए एक प्रसिद्ध ज्योतिषी को बुलाया । ज्योतिषी ने कहा– राजन्, इसका अर्थ है कि आप अपनी आँखों से अपने पुत्र–पौत्रों आदि की मृत्यु देखेंगे।

राजा ने नाराज होकर उसे जेल में डाल दिया । फिर एक अन्य ज्योतिषी को बुलाया गया । उसने स्वप्न का अर्थ बताते हुए कहा– राजन्, आपकी आयु बहुत लम्बी है । आप अपने पुत्र–पौत्रों से भी अधिक समय तक जीवित रहोगे ।

राजा ने उसे अनेक पुरस्कार देकर विदा किया । वस्तुतः दोनों ने बात एक ही कही थी । पर दोनों के कहने का ढ़ंग अलग–अलग था । इसलिए अपनी बात कहते समय सही विधि, समय तथा वातावरण का भी ध्यान रखना चाहिए ।

संग्रहकर्त्ताः-
आदर्श कुमार
जे टी ओ, सी एण्ड सी ग्रुप
मानकीकरण निदेशालय

कर्त्तव्यनिठा

काम के प्रति हमारी निठा कैसी हो, इस संबंध में श्री तानाजी मालसुरे के बलिदान की कथा है ।

महाराट्र में कोंडाना नामक एक प्रसिद्ध किला है । वह मुगलों के अधिकार में था। एक बार माँ जीजाबाई ने उसे जीतकर देने की इच्छा शिवाजी के सम्मुख प्रकट की । बस, शिवाजी ने ठान लिया कि यह किला जीतना ही है ।

पर कोंडाना बड़े दुर्गम स्थान पर बना था । उसे जीतना आसान न था । शिवाजी ने अपने साथियों के नामों पर विचार किया तो उन्हें तानाजी मालसुरे का नाम ध्यान में आया । वे हर प्रकार का खतरा उठाकर भी काम पूरा करने में निपुण थे।

शिवाजी उन्हें बुलाने के लिए किसी दूत को भेज ही रहे थे कि तानाजी अपने बेटे राघोबा के विवाह का निमंत्रण देने के लिए स्वयं ही वहाँ आ गये। शिवाजी ने सोचा कि तानाजी की व्यस्तता के कारण अब वे स्वयं कोंडाना जीतने जाएँगे । पर तानाजी ने शिवाजी को निश्चिंत करते हुए कहा- महाराज, रोघोबा का विवाह बाद में होगा, पहले कोंडाना किला जीता जाएगा ।

ताना जी ने पुत्र के विवाह का कार्यक्रम स्थगित कर दिया और सेना लेकर आधी रात में कोंडाना दुर्ग पर धावा बोल दिया । भयंकर युद्ध में ताना जी स्वयं मारे गये; पर किला उन्होंने जीत लिया ।

युद्ध के बाद शिवाजी ने कहा - गढ़ आया, पर सिंह गया । ताना जी की स्मृति में उस किले का नाम उन्होंने 'सिंह गढ़' कर दिया । कुछ समय बाद ताना जी के पुत्र का विवाह शिवाजी ने स्वयं बड़ी धूमधाम से किया ।

संग्रहकर्त्ताः-
आदर्श कुमार
जे टी ओ, सी एण्ड सी ग्रुप
मानकीकरण निदेशालय

ईश्वर सर्वत्र है

हरिद्वार से गंगाजल लेकर उससे रामेश्वर में भगवान शंकर का अभिोक करने का प्राचीन समय से ही बड़ा महत्व रहा है । महाराट्र के प्रसिद्ध संत एकनाथ जी अपने कुछ शियों व संतो के साथ गंगाजल लेकर पैदल-पैदल रामेश्वर जा रहे थे ।

नगर, ग्राम, जंगल, पर्वत, रेगिस्तान आदि पार करते हुए वे चले जा रहे थे । रेगिस्तान में एक संकट उपस्थित हो गया । सब यात्रियों ने देखा कि मार्ग में एक गधा बुरी तरह धरती पर लोटपोट हो रहा था । उसे देखते ही सब समझ गये कि यह प्यास से तड़प रहा है । यदि उसे पानी न मिला तो वह कुछ देर में मर जायेगा ।

पर यात्रियों के पास तो पानी के नाम पर केवल गंगाजल था । इसलिए सब उसे सहानुभूति से देखते रहे; पर एकनाथ ने अपनी काँवड़ उतारी और कलश में रखा सारा गंगाजल गधे को पिला दिया । गधे ने तृप्ति से उनकी ओर देखा और अपनी राह चला गया ।

सबने एकनाथ जी को टोका- यह आपने क्या किया; इतने कट एवं परिश्रम से आप जो गंगाजल लाये थे, वह आपने गधे को पिला दिया । अब भगवान को क्या चढ़ायेंगे?

एकनाथ जी ने कहा- भगवान सर्वत्र है । रामेश्वर के शिवलिंग में जो भगवान हैं, वही इस गधे के अंतःकरण में भी हैं । यदि हम जल होते हुए भी इस मूक प्राणी को प्यासा मरने देते तो भगवान भोले शंकर हमें कभी क्षमा नहीं करेंगे ।

उनके साथ चल रहे अन्य संत तथा शिय एकनाथ जी के हृदय की विशालता देखकर दंग रह गये ।

संग्रहकर्त्ताः-
आदर्श कुमार
जे टी ओ, सी एण्ड सी ग्रुप
मानकीकरण निदेशालय